

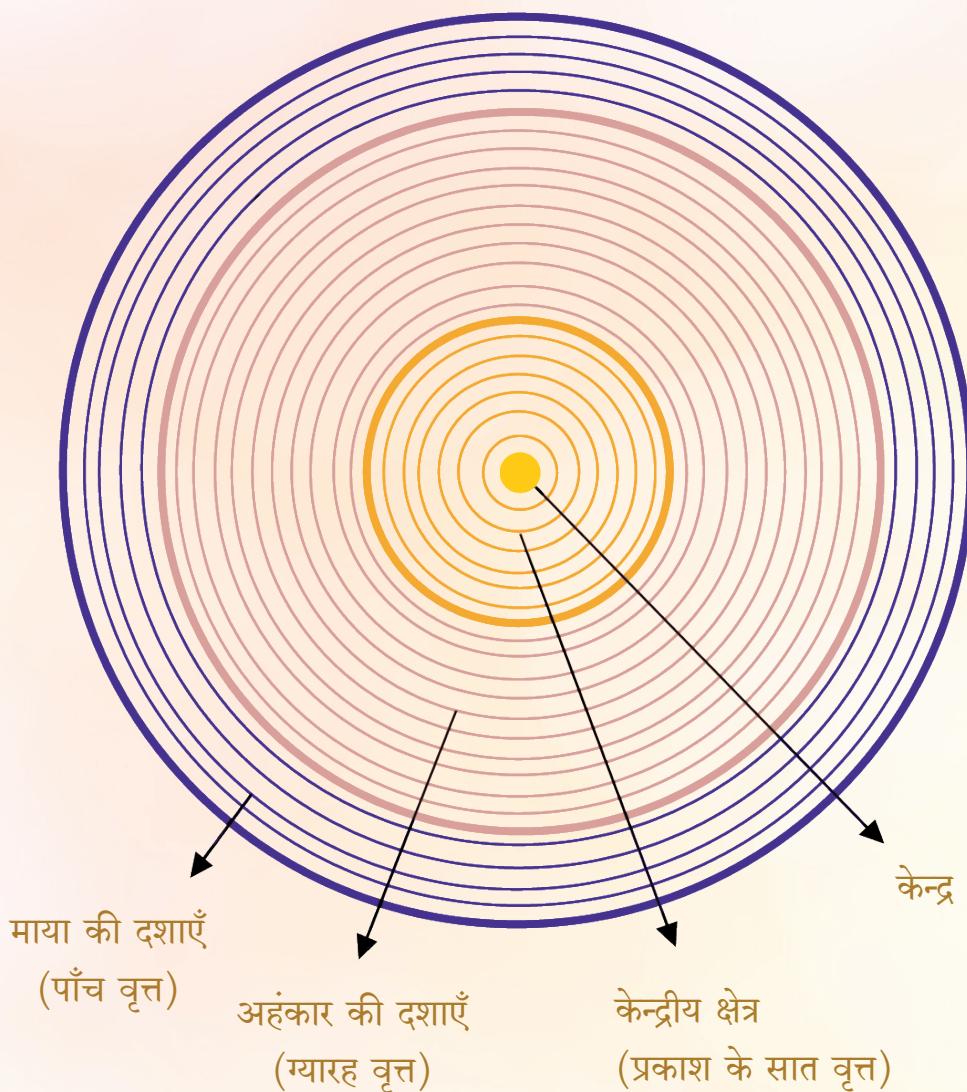
प्रेम की किरण

पर ले जाना

प्रिय मित्रों,

1940 के दशक में, बाबूजी महाराज ने किताबों की एक शृंखला लिखी थी, जिनमें उन्होंने केन्द्र की ओर इंसान की आंतरिक यात्रा का वर्णन किया था। इंसान का केन्द्र यानी वह जो हर चीज़ का सृजनात्मक स्रोत है और वह परम अवस्था जो ब्रह्माण्ड के अस्तित्व में आने से पहले मौजूद थी। उन्होंने केन्द्र की ओर के मार्ग में आने वाली बाधाओं के बारे में भी बात की और उन बाधाओं के हल भी प्रदान किये। इससे भी ज्यादा आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि उन्होंने हमें बताया कि यह कितना सरल है। उन्होंने खुद को मार्गदर्शक के तौर पर प्रस्तुत करके आसान रूप से हल प्रदान किया, और सरल चित्रों का उपयोग करके यात्रा को समझने में हमारी मदद की। अचानक से सबसे गहनतम ज्ञान सम्पूर्ण संसार के समक्ष उपलब्ध हो गया था। बाबूजी ने बिना भेद-भाव किये उन सभी का स्वागत किया जो अलग-अलग संस्कृतियों, सभी उम्र के समूहों और वर्ग से आये थे। उनका सपना था कि हम सभी प्रेम में आगे बढ़ते हुए केन्द्र की ओर जायेंगे और इंसान के रूप में अपनी उच्चतम सम्भावनाओं की खोज करेंगे। उन्होंने इस यात्रा का वैज्ञानिक रूप से वर्णन करते हुए अपने व्यक्तिगत अनुभव से हमारा मार्गदर्शन किया, और इस संदर्भ में उनके चित्र एवं निर्देश बहुत ही सटीक, स्पष्ट और सरल हैं।

इनमें से एक 23 वृत्तों वाला चित्र है, जो भीतर-ही-भीतर केन्द्र की ओर जाने वाले मार्ग से गुज़रने पर आने वाले विभिन्न चरणों या स्तरों को दर्शाता है। हम बाहरी परिधि से शुरू करके उन चक्रों से गुज़रते हैं जो हमारे सूक्ष्म शरीर की शारीरिक-रचना को परिभाषित करते हैं। बाबूजी ने भी इन तीन क्षेत्रों का वर्णन किया है जिनमें ये चक्र पाये जाते हैं - हृदय क्षेत्र, मनस क्षेत्र और केन्द्रीय क्षेत्र। केन्द्र की ओर जाते हुए मार्ग में ये सभी चरण आते हैं। यदि आपको बाबूजी के विवरणों के बारे में मालूम न हो तो, आप इन विषयों पर उनकी किताबें पढ़ सकते हैं - जैसे सत्य का उदय, राजयोग का दिव्य दर्शन और अनंत की ओर। इससे भी बेहतर होगा कि हम खुद ही इस यात्रा का अनुभव करें। बेशक, ये 23 वृत्त वास्तव में नहीं हैं, ठीक उसी तरह जैसे विश्व के नक्शे पर अक्षांश और देशांतर की रेखाएँ वास्तव में नहीं होतीं। ये महज संदर्भ बिन्दु हैं।



स्वतंत्रता की ओर प्रयाण

हमें इस आंतरिक यात्रा पर किस तरह आगे बढ़ाया जाता है? हमें प्रेम की किरण पर ले जाया जाता है। लेकिन इस राह में बाधाएँ होती हैं। ये बाधाएँ क्या हैं? उनसे कैसे उभरें?

जिस तरह प्रकाश की किरण सबसे पारदर्शी काँच से आर-पार होने पर सीधे पथ से मुड़ जाती है और विकृत दृश्य निर्मित करती है, उसी तरह प्रेम की किरण भी सबसे सूक्ष्म परत से आर-पार होने पर अपनी राह से फिर जाती है। यदि कोई परतें न होतीं, तो हम सभी केन्द्र से सीधे प्रवाहित होने वाले विशुद्ध प्रेम की अनुभूति करते, और हमें इस आंतरिक यात्रा की ज़रूरत ही नहीं होती। लेकिन हमारे मानवीय अस्तित्व की प्रकृति ऐसी है कि इसमें परते होती ही हैं, इसीलिये हमें इन 23 वृत्तों को चरण-दर-चरण करके पार करना होगा, और जैसे-जैसे हम केन्द्र की ओर जाते हैं हमें अपने सामर्थ्य एवं क्षमता को बढ़ाना होगा।

जिस तरह प्रकाश की किरण सबसे पारदर्शी काँच से आर-पार होने पर सीधे पथ से मुड़ जाती है और विकृत दृश्य निर्मित करती है, उसी तरह प्रेम की किरण भी सबसे सूक्ष्म परत से आर-पार होने पर अपनी राह से फिर जाती है। यदि कोई परतें न होतीं, तो हम सभी केन्द्र से सीधे प्रवाहित होने वाले विशुद्ध प्रेम की अनुभूति करते।

परिधि और केन्द्र के बीच में कई परतें होती हैं। परिधि पर, हमारा प्रेम हमारी इच्छाओं की खींचा-तानी को पूरा करने वाला, और बाहर की ओर ज्यादा उन्मुख होता है। उदाहरण के लिये, एक बच्चा अपने माता-पिता और खिलौनों के प्रेम में खींचा चला जाता है, कोई युवा युगल-प्रेम और दोस्ती में खींचा चला जाता है, एक वयस्क पारिवारिक जीवन से, नौकरी, खेल-कूद, शौक, संपत्ति और डिजिटल उपकरणों से आकर्षित रहता है। कभी-कभार लालच, जलन, ईर्ष्या, होड़ और नाराज़गी हम पर हावी हो जाती है। तब प्रेम अधिकार जताने वाला और स्वार्थी बन जाता है। जब ऐसा होता है, तब जिस तरह प्रकाश की किरण दो आकाशगंगाओं के बीच फैले अंतरिक्ष के ब्लैक होल से बाहर नहीं निकल पाती है, ठीक उसी तरह हमारा प्रेम सीमित हो जाता है। धीरे-धीरे, हमारे अभ्यास के ज़रिये, हम इन भावनाओं पर महारत हासिल करते हुए बेहतर समझ और सही सोच के साथ उच्चतर सम्भावना पर केन्द्रित होना सीखते हैं। हालाँकि हम अपने परिवारों, अपने काम, इत्यादि से प्रेम करना जारी रखते हैं, हम उच्चतर जागरूकता भी विकसित करते जाते हैं। भावनाओं पर महारत हमें पहले आधार पर ले जाती है। उसके बाद, जैसे-जैसे हम इस राह पर चलना जारी रखते हैं हमें विभिन्न पड़ावों पर खुद का सामना करना ही होगा।

हम हृदय क्षेत्र के पाँच वृत्तों के साथ, अपनी यात्रा की शुरुआत हृदय में करते हैं। हमारी इच्छाओं से शुरू होते हुए, इसका हर पड़ाव एक भावनात्मक परत से सम्बन्धित होता है। हम जिस प्रगतिशील रूपांतरण से गुज़रते हैं वह पूरी तरह से इन परतों से छुटकारा पाने के बारे में है।

हम जिन परतों का अनुभव करते हैं वे वास्तव में ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें हम अच्छे से जानते हैं। उदाहरण के लिये, पति-पत्नी या साथीदार के रिश्ते में हम एक-दूसरे को मानो कैद कर लेते हैं। सैंकड़ों दम्पतियों में से, बिले ही कुछ तीन-चार दम्पतियों को सच्चा प्रेम मिलता है। ज्यादातर दम्पति अधिकार जताने वाले होते हैं। अन्य परतों में हमारी मान्यताएँ आती हैं, जैसे हमारी धार्मिक मान्यताएँ। इनके कारण अलग-अलग मान्यताएँ रखने वाले लोगों के प्रति पूर्वाग्रह पैदा होता है, फिर चाहे यह धर्म, राजनीति या विचारधारा के बारे में ही क्यों न हो। फिर हमारे सिद्धान्त आते हैं, जिन्हें हम आमतौर पर बेहद पसंद करते हैं - जैसे ईमानदार और न्यायप्रिय होने की ज़रूरत। हालाँकि इनमें से कई सिद्धान्त बहुत महान हैं, लेकिन यदि हम अपनी स्वाभाविक पसंद को लेकर हठीले बन जाते हैं, तो हम रिश्तों में माफ़ करके आगे नहीं बढ़ पायेंगे, इसकी बजाय हम जिस चीज़ को सही मानते हैं उसके लिये हमेशा संघर्ष करते रहेंगे। इससे भ्रान्ति पैदा होती है - जिसकी बजह से आखिर में हम लोगों से नफ़रत करने लगते हैं - और तब यह प्रेम की किरण को केन्द्र की ओर नियत मार्ग से विमुख कर देती है।

हम हृदय क्षेत्र के पाँच वृत्तों के साथ, अपनी यात्रा की शुरुआत हृदय में करते हैं। हमारी इच्छाओं से शुरू होते हुए, इसका हर पड़ाव एक भावनात्मक परत से सम्बन्धित होता है। हम जिस प्रगतिशील रूपांतरण से गुज़रते हैं वह पूरी तरह से इन परतों से छुटकारा पाने के बारे में है।

इसका सटीक उदाहरण लोकप्रिय संस्कृति में स्टार वॉर्स से एनाकिन स्कायवॉकर है। एनाकिन के पास चयनित जेडाई बनने की क्षमता थी, जो फ़ोर्स का संतुलन वापस ला देता, और वह परवाह करने वाला एक दयालु युवक था। लेकिन बाद में उसने अपनी प्रिय माँ और प्यारी पेड़मे की मृत्यु पर शोक के साथ एक नाता जोड़ लिया था, और इसके कारण आखिर में वह डार्थ वॉडर में परिवर्तित हो गया।

अहंकार अस्तित्व का अंधकारमय पहलू है। हम अपने अस्तित्व के केन्द्र में प्रकाश के स्रोत से जितना ज्यादा दूर होते हैं, अंधकार की परछाई हमें उतनी ही लम्बी महसूस होती है। अहंकार से क्या और कौन संतुष्ट होता है? जब कोई दूसरों के सख्त विरोध के सामने भी हमारे साथ सहमत होता है, तब वह इंसान हमारा परम मित्र बन जाता है! क्यों? इसके बिलकुल विपरीत, जब कोई बेहद करीबी इंसान हमारे साथ पूरी तरह असहमत होता है, तब अकसर हम अपना आपा खो बैठते हैं।

इच्छाओं से निपटना अहंकार से निपटने से ज़्यादा आसान होता है, क्योंकि एक बार इच्छाएँ पूरी हो जायें तो वे दोबारा नहीं उभरेंगी। हो सकता है कि वे खुद को दोहराएँ, लेकिन वे कुछ वक्त के लिये होंगी। साथ ही, काफ़ी हद तक खाने की इच्छा और अन्य इन्द्रियों के सुख की पूर्ति स्वाभाविक होती है। जहाँ तक अहंकार की बात है तो इसका सिलसिला लगातार जारी रहता है। अहंकार ताक़त और ओहदे पर पनपता है ... न कि ऐसी किसी भी चीज़ पर जो इसे टिके रहने में बढ़ावा देती है। यही लक्षण हमें बाकी के प्राणी जगत से अलग करता है। ऐसा लगता है कि वह एकमात्र चीज़ जो विकास के लिये है, वही हमारी चेतना के विस्तार के विरुद्ध काम करती है।

ऐसे पतन का खतरा जानवरों और पेड़-पौधों में नहीं होता है, लेकिन उनके लिये आगे सचेतन क्रम-विकास का लाभ भी मौजूद नहीं होता है। हालाँकि उनका अहंकार न के बराबर रहता है, फिर भी पेड़-पौधों और जानवरों की तरह बरताव करने से हमारा क्रम-विकास नहीं होता। हम प्रसन्नचित्त होकर, अनंत सागर के साथ एक होकर, अदृश्य दिव्यता के साथ सम्बन्ध जोड़कर ही अनवरत माँगों और अहंकार के बोझ से खुद को मुक्त कर सकते हैं। जब हम बाहरी संसार के साथ अपनी पहचान बना लेते हैं, तब हम हमेशा उसमें मग्न रहते हैं और इसका ओर-छोर कहीं नज़र नहीं आता। यह ठीक किसी जाल को बुनने और फिर उसी में फँस जाने के समान है।

हमारी प्राकृतिक या कामुक इच्छाओं को पूरा करने के लिये हमेशा बाहरी दुनिया की ज़रूरत होती है; एक तरह से कहें तो हमारी निर्भरता बाहरी चीज़ों पर होती है। ऐसी निर्भरता हमें इच्छाओं का गुलाम बना देती है। एक शेर किसी भैंस या हिरन को जान से इसीलिये मार देता है कि वह खुद की रक्षा करना चाहता है। किसी नर सिंह के पास प्रजनन के लिये छः सिंहनियों का समूह होता है। यही प्रकृति है। सटीक शब्दों में कहा जाये तो, बाहरी प्रकृति। भले ही हमने रसगुल्ला, बिरयानी, या पिज़ज़ा खाना छोड़ दिया हो, लेकिन हम खाना खाने की ज़रूरत से कभी छुटकारा नहीं पा सकते। तब किसी इंसान के अहंकार की पूर्ति के बारे में क्या? क्या अहंकार ईश्वर की देन है? यह खुद से बनाया हुआ होता है। यह आंतरिक, अदृश्य संसार से उत्पन्न होता है।

हम भूख-प्यास मिटाने और विषय-भोग की पूर्ति की ज़रूरत को आसानी से समझ सकते हैं। विषय-भोग ज़रूरी हैं और वे प्रकृति की योजना का हिस्सा हैं। क्या अहंकार भी प्रकृति की देन है? जब हमारा पेट भारीपन और दर्द महसूस करने लगे, तब यह भीतर से एक इशारा है कि अब और थोड़ा भी ज़्यादा खाया तो परेशानी होगी। आमतौर पर गैर-ज़रूरी चीज़ों के लिये चेतावनी आती है। अहंकार भी गैर-ज़रूरी है, गैर-ज़रूरी चीज़ों की पूर्ति करना व्यक्तिगत स्वास्थ्य के विरुद्ध है, फिर चाहे वह शारीरिक हो, मानसिक हो, भावनात्मक हो या आध्यात्मिक।

हर बार, जब मुझे किसी ज़रूरत पर आधारित ई-मेल आते हैं, तब मैं या तो उनका जवाब देता हूँ या उन्हें संग्रह कर लेता हूँ। जब मैं जवाब नहीं देता, तो अकसर मेल भेजने वाला वापस पूछता है, “दाजी, क्या आप मुझसे नाराज़ हैं?” वे किसी न किसी तरह से मुझे जवाब देने के लिये मजबूर

करते हैं, और उम्मीद करते हैं कि मैं कहूँ, “नहीं, नहीं, मैं आपसे नाराज़ नहीं हूँ।” ऐसे ई-मेल के जवाब-तलब बेमानी होते हैं और इनसे सभी सम्बन्धित लोगों का वक्त ज़ाया होता है। जो लोग अहंकार में लिप्त होकर उसे बढ़ावा देते हैं वे मुश्किल से ही कभी भीतर की गहराई में जा पायेंगे। अहंकार बाहरी तौर पर बखूबी बढ़ावा देने की माँग करता है, ज़्यादातर किसी ऐसे इंसान से जिसका मिजाज़ आपके जैसा हो, जिसकी सोच आपके जैसी हो या फिर ऐसा कोई जिसका आप बहुत ज़्यादा आदर करते हों।

समान प्रकार के लोग क्यों? भारतीय संसद में कोट-टाइ पहनने का क्या फ़ायदा है? आपको देख कर कौन ईर्ष्या करने वाला है? स्वामी विवेकानन्द या रामकृष्ण परमहंस के समक्ष हीरों के हार और सोने के धागों से बनी पोशाक पहनने का क्या लाभ होगा? क्या उन्हें ईर्ष्या होगी? इसकी बजाय, उनके द्वारा प्रशंसा के बिना आपके घमण्ड को मुँह की खानी पड़ेगी। अहंकार वह सबसे बाहरी हृद है जो आपको अपने केन्द्र से दूर करता है। उस सबसे बाहरी हृद से, अपने ही दिल की बात सुनना मुश्किल हो जाता है। इसकी बजाय, आप दूसरों के ज़्यादा करीब होते हैं और उनकी राय को ज़्यादा अहमियत देते हैं। एक आध्यात्मिक इंसान के लिये ऐसी प्रवृत्ति विष के समान हानिकारक होती है।

अहंकार अक्सर सामूहिकता से पहचाना जाता है : उदाहरण के लिये, आपको यह गुमान हो सकता है कि दूसरे देशों के हालात के मुकाबले आपका देश श्रेष्ठ है। वैज्ञानिक और आध्यात्मिक लोग सिर्फ़ अपने ख्यालों को ही सही मानते हुए संकुचित विचार वाले बन सकते हैं। “मुझे मालूम है। मैं सही हूँ,” यह बीमारी शायद सबसे बड़ी महामारी है जिसका हम सामना करते हैं। यह एक ऐसी अहम परत है जो प्रेम की किरण को अपनी राह से फेर देती है।

हम अपनी मान्यताओं, अपने सिद्धान्तों और अपने पूर्वाग्रहों से जितना ज़्यादा आसक्त होते जाते हैं, उतनी ही बड़ी बाधाएँ प्रेम की किरण को अवरुद्ध करके, हमें मंज़िल तक पहुँचने से रोकती हैं। हमारा सामूहिक अहंकार खास तौर से खतरनाक होता है क्योंकि यह हमें उत्तेजित जनसमूह की मानसिकता की ओर ले जाता है। हम इस मानसिकता को धार्मिक कट्टरता में देखते हैं और जब समाज राजनीतिक रूप से गुटों में बँट जाता है तब ये पूर्वाग्रह उन्हें नफ़रत, हिंसा और कभी-कभार युद्ध की ओर अग्रसर करते हैं। ऐसे माहौल में, हमारे आसपास के लोग दूसरों के नज़रियों को समझने में हमारी मदद करने की बजाय अक्सर हमारी अपनी मान्यताओं को मज़बूत बना देते हैं। तब हम और भी ज़्यादा संकुचित विचारों वाले बन जाते हैं।

लेकिन अपनेपन का भाव हमारा मित्र हो सकता है, जो हमें विपरीत दिशा में यानी सभी को शामिल करने की ओर ले जाता है। ऐसा तब होता है जब अपनेपन का भाव सच में प्रेमपूर्ण हो। तब हमारी जागरूकता विस्तारित होती है, और वही आध्यात्मिक यात्रा है। हम अपनेपन के बारे में कैसे सीखते हैं? अपनी माँ के गर्भ से ही हम इसका अनुभव करना शुरू कर देते हैं। जैसे-जैसे हम बढ़ते जाते हैं, हम दूसरे लोगों से मिलते हैं जिनके साथ हम अपनापन महसूस करते हैं। हम बच्चों के प्रति और

हमउम्र लोगों के प्रति स्नेह विकसित करते हैं। हम अपने बुजुर्गों के प्रति, साथ ही हमारा मार्गदर्शन करने वाले मालिक के प्रति प्रेम, भरोसा और श्रद्धा महसूस करते हैं। ये सभी अपनेपन की उपज हैं, और जैसे-जैसे हम अपनी आंतरिक यात्रा में आगे बढ़ते जाते हैं, यह अपनापन कभी मज़बूत होता जाता है तो कभी-कभार कमज़ोर पड़ता जाता है। ये सबकुछ अनुभव करते हुए हम खुद से पूछते हैं, “किससे प्रेम करें?” “किससे मेल-जोल रखें?” “किस पर भरोसा करें?” इत्यादि। स्नेह गहन होकर प्रेम बन जाता है, और आखिरकार समर्पण की अवस्था में इसका समापन होता है। तभी जाकर अपनेपन का भाव भक्ति में विकसित होता है।

प्रेम की किरण जिस गति से चलती है, वह प्रकाश की गति से कहीं ज्यादा तेज़ होती है, इसीलिये यदि हम सभी परतों को निकाल सकें, तो हम तुरन्त ही केन्द्र पर पहुँच जायेंगे। जब इन परतों द्वारा निर्मित की गई बाधाएँ प्रेम की किरण को केन्द्र से मोड़ देती हैं, तो हम बहुत ज्यादा तकलीफ़ उठाते हैं। पूर्वाग्रह, ईर्ष्या, जलन, लालच और गुस्से जैसी कुछ परतें इतनी असरदार होती हैं कि वे ज़मीन

स्नेह गहन होकर प्रेम बन जाता है,
और आखिरकार समर्पण की अवस्था
में इसका समापन होता है। तभी जाकर
अपनेपन का भाव भक्ति में विकसित
होता है।

के नीचे न्यूक्लीयर बंकर की तरह काम करती हैं - वे किसी भी चीज़ को भीतर घुसने नहीं देतीं। वे प्रेम की किरण को अपना करिश्मा दिखाने से रोकती हैं।

हाल ही में, मैं इस बारे में अधिकाधिक जागरूक हो गया हूँ कि प्राचीन भारतीय परम्पराओं में इस बारे में हमें सिखाने के लिये बहुत कुछ है, खासकर भक्ति सूत्र। हम अकसर भक्ति का अनुवाद “प्रेम और भक्ति” के रूप में करते हैं, लेकिन यह इससे ज्यादा तात्त्विक है। यह दिल के ज़रिये हर चीज़ से जुड़ाव का एहसास है - यानी सार्वभौमिक दिव्य चेतना के साथ हमारी व्यक्तिगत चेतना का जुड़ाव। भक्ति के बिना, हम जो भी सोचते और करते हैं उसमें उत्साह और आनंद जैसे प्रमुख तत्त्व की कमी होती है, इसीलिये इसमें उद्देश्य का अभाव होता है। आंतरिक यात्रा में भक्ति हमारी जीवनरेखा है; यह हमें प्रेम की किरण के साथ जोड़े रखती है। यह कहना सही होगा कि भक्ति प्रेम की किरण को बढ़ावा देती है।

अहंकार को सिर्फ़ रोब जताने और व्यक्तिगत विजय की भाषा ही आती है, प्रेम की नहीं। एक

अहंकारी इंसान के लिये विनम्रता, अनामत्व और खुले दिल की ढलनशीलता - ये अनजाने शब्द हैं, वह इन्हें आसानी से नहीं समझ सकता है। केन्द्र की ओर हमारी यात्रा हमें उत्तरोत्तर रूप से एक वृत्त के बाद दूसरे वृत्त पर, एक आयाम से दूसरे आयाम पर ले जाती है, और यदि हम तालमेल नहीं बिठा पाते तो, हमें हर नये वातावरण के मुताबिक ढलने में दिक्कत होती है। इसीलिये संतजन चरित्र को परिशुद्ध करने या अखलाक की ज़रूरत पर बात करते हैं। वे अपने अनुभव से जानते हैं कि



आंतरिक यात्रा में भक्ति हमारी जीवनरेखा है; यह हमें प्रेम की किरण के साथ जोड़े रखती है। यह कहना सही होगा कि भक्ति प्रेम की किरण को बढ़ावा देती है।

हमारी आध्यात्मिक स्थिति के आंतरिक वातावरण के बदलाव के साथ-साथ हमें अपने बरताव को ढालना होगा, और प्रेम इस तालमेल को मुमकिन बनाता है। उदाहरण के लिये, जब हम हृदय क्षेत्र के चक्र 2 पर पहुँच जाते हैं, जो कि भौतिक संसार से मुक्त, शान्ति और प्रशान्ति का ईश्वरीय स्थान है, तब ऐसे स्थान पर पहुँचने के बाद क्या प्रियजनों पर चिल्लाना ठीक है? उस तरह का आक्रोश भरा बरताव चक्र 2 के आंतरिक आयाम से मेल नहीं खाता।

अपनी किताब अनंत की ओर में, बाबूजी एक चक्र से दूसरे चक्र पर क्रमानुसार प्रगति का वर्णन करते हैं। हृदय के पहले चक्र पर, वे हमें उस दशा के बारे में पूरी तरह जागरूक होने के लिये कहते हैं जिसे ध्यान के दौरान मालिक ने हमारे भीतर जीवंत किया है, फिर उस दशा को आत्मसात् करना है ताकि हम उस दशा के साथ एक हो जायें। इस प्रक्रिया के ज़रिये हम स्वाभाविक रूप से अधिकाधिक एकरूपता विकसित करते हैं। दूसरे चक्र पर, वे हमें याद दिलाते हैं कि यह हमारी गहन भक्ति ही है जिसने हमें प्रेरित करके इस अगले आयाम पर पहुँचाया है। हम कह सकते हैं कि भक्ति की गहनता दूसरे चक्र में हमारी पहुँच के अनुपात में होती है। भक्ति - यह एकरूपता का एक गहनतर स्तर है। तीसरे चक्र पर, हम सच्चे प्रेम की अग्नि का अनुभव करते हैं, जो बदले में दिव्य कृपा को आकर्षित करती है, और हमें इस यात्रा में आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करती है। एकरूपता की यह गहनतर अनुभूति इतनी प्रभावकारी होती है कि इसे सीधे केन्द्र से प्रतिसाद मिलता है। इस तरह से, जब हमें प्रेम की किरण पर आगे ले जाया जाता है, उस दौरान हर आयाम पिछले वाले आयाम पर आधारित होता है।

हम सम्बन्धों के ज़रिये प्रेम करना सीखते हैं। ये सम्बन्ध प्रेम का प्रशिक्षण स्थल हैं। बच्चों और परिवारजनों के साथ का अपनापन स्नेह के रूप में व्यक्त होता है, और यही अपनापन समान लोगों के बीच गहनतम होकर प्रेम बन जाता है, लेकिन यहाँ भी अहंकार बीच में आ जाता है। इसके कारण जो अलगाव आ सकता है उसे यदि टालना हो तो, स्वाध्याय का अभ्यास महत्वपूर्ण हो जाता है। जब हम प्रेम को त्याग देते हैं तो उसका नतीजा अलगाव ही होता है।

जबकि प्रेम विकसित करने में अपनापन एक ज़रूरी सोपान है, लेकिन यह अटकाव भी हो सकता है। यदि हम किसी निश्चित स्तर पर आसक्त हो जाते हैं, तो हम अटके रहते हैं। उदाहरण के लिये, जब हम सिर्फ परिवार पर केन्द्रित रहते हैं, तब हम समाज, या व्यापक रूप में मानवजाति के अगले स्तर, या पूर्ण सृष्टि के प्रति अपने प्रेम को बढ़ा नहीं सकते। जब प्रेम की राह सँकरी हो तो हम सभी से प्रेम नहीं कर पाते हैं। सच्ची भक्ति पाने के लिये हमें प्रेम करने की अपनी क्षमता को विस्तारित करते हुए इसमें पूरे संसार को शामिल कर लेना चाहिये। दिल की यही सच्ची उदारता आध्यात्मिक अभ्यास का परिणाम है।

आमतौर पर, प्रगति इस तरह से होती है : अपनेपन से स्नेह, स्नेह से प्रेम और उसके बाद श्रद्धा। श्रद्धा बहुत ही उच्च उपलब्धि है जहाँ सच्ची श्रद्धा समर्पण में विकसित हो जाती है। हम इन सभी प्रगतिशील चरणों से गुज़रते हैं। लेकिन उसके बाद क्या होता है? हम कहाँ जाकर पहुँचते हैं? भक्ति का उद्देश्य बिना किसी रुकावट के प्रेम की किरण पर सहजता से यात्रा करने में सिर्फ हमारी मदद करना है, ताकि हम परमतत्त्व के साथ लय हो सकें। लयावस्था में, हमारी इच्छाओं, भावनाओं और अहंकार की परतों को हटा दिया जाता है ताकि हमारी यात्रा का मार्ग सुगम हो। आप सोचेंगे कि अब तक तो हम केन्द्र पर पहुँच गये हैं, लेकिन अभी बहुत कुछ बाकी है। इस लयावस्था पर पहुँचने के बाद ही, सही मायनों में सच्ची यात्रा की शुरुआत होती है! सरल शब्दों में कहें तो, एक बार जब

सच्ची भक्ति पाने के लिये हमें प्रेम करने की
अपनी क्षमता को विस्तारित करते हुए इसमें पूरे
संसार को शामिल कर लेना चाहिये। दिल की
यही सच्ची उदारता आध्यात्मिक अभ्यास का
परिणाम है।

आप अपनी इच्छाओं को त्याग देते हैं, तब मुक्ति मिलना तय है; एक बार जब अहंकार मिट जाता है, विलय तुरन्त ही हो जाता है।

अब हम केन्द्रीय क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, और इसके भीतर सात वृत्त हैं, जिन्हें हम प्रकाश के वृत्त कहते हैं। हम सूक्ष्मतम प्रकार की अधिचेतना की अनुभूति करते हुए आगे बढ़ना जारी रखते हैं। इस क्षेत्र में, चेतना अपना वास्तविक रूप ले लेती है। इच्छा, भावना और अहंकार के वृत्तों के परे, यह असलियत का क्षेत्र होता है। यहाँ पर हम सूक्ष्म समरूपता के विभिन्न स्तरों से होते हुए अनस्तित्व की ओर जाते हैं। केन्द्रीय क्षेत्र की शुरुआत स्वचालन के चरण से होती है - यानी एक सूक्ष्म बोध कि सबकुछ अपने आप ही हो रहा है। अब किसी भी काम में “कर्ता” का भाव नहीं होता। यह स्वचालन सहज और प्रकृति के समरूप होता है।

अगले चरण पर, स्वचालन की भावना ग्रायब हो जाती है। इसे समझने का सबसे आसान तरीका है कि दैनिक जीवन में रमे रहते हुए गहन निद्रा की अवस्था में होने की कल्पना करना। इस अनभिज्ञता की अवस्था में, कर्मों की कोई छाप नहीं बनती। मानसिक स्तर पर विचार या कर्म किसी तरह भी शामिल नहीं होते हैं।

उसके बाद, जैसे-जैसे प्रेम की किरण हमें केन्द्र के ज्यादा करीब ले जाती है, वैसे-वैसे अनभिज्ञता की अवस्था और अधिक परिष्कृत होकर विशुद्ध अस्तित्व बन जाती है। सभी सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं, लेकिन यह अंत नहीं है। अब भी अप्रकट गति मौजूद है।



आमतौर पर, प्रगति इस तरह से होती है : अपनेपन से स्नेह, स्नेह से प्रेम और उसके बाद श्रद्धा।

उसके बाद हम केन्द्र की ओर तैरते जाते हैं। बाबूजी केन्द्र को गतिहीनता और “अपने आप में अनंत” के रूप में वर्णित करते हैं, जहाँ विशुद्ध आशर्चय और उच्चतम प्रकार के अचम्भे मिलते हैं। यही वह गतिहीन केन्द्र है जो ऐसी अप्रकट गति को बनाये रखता है जो कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को कायम रखती है।

बाबूजी उस प्रकाश का भी वर्णन करते हैं जो केन्द्र से निकलता है, यह केन्द्रीय क्षेत्र के बाहरी किनारे की ओर जाकर “वृत्त” बनाता है। वे ‘प्रकाश’ शब्द का उपयोग करते हैं लेकिन कहते हैं कि उसका वर्णन करने के लिये वाकई कोई शब्द नहीं है। शायद यह प्रकाश ही है जो केन्द्रीय क्षेत्र के सात वृत्तों

को अपना नाम प्रदान करता है, जिन्हें “प्रकाश के वृत्त” कहा जाता है। आपको क्या लगता है? हम सिर्फ़ इतना ही जानते हैं कि केन्द्रीय क्षेत्र में प्रवेश करने का एक ही तरीका है, जिसके ज़रिये हम उस वृत्त को पार कर सकते हैं – और वह है प्रेम की किरण पर, इसके लिये मालिक पर पूर्ण निर्भरता होनी चाहिये।

हृदयपूर्ण प्रार्थनाओं के साथ,

कमलेश

कान्हा शान्तिवनम्



28 सितम्बर 2021 को
पूज्य दाजी के
66वें जन्मोत्सव पर दिया गया संदेश

heartfulness
advancing in love

ੴ